



# सौंफ की उन्नत खेती

अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना  
(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)



सब्जी विज्ञान विभाग, उद्यान एवं वानिकी महाविद्यालय  
आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय,  
कुमारगंज, अयोध्या

## सौंफ की उन्नत खेती

### परिचय

सौंफ की खेती रबी की फसल के रूप में की जाती है। सौंफ का उपयोग मसाला, खाद्य एवं पेय पदार्थों में किया जाता है। सौंफ फाइबर, विटामिन सी, पोटेशियम का अच्छा स्रोत है। इसका उपयोग मांस व्यंजन, सूप आदि के स्वाद के लिए किया जाता है। सौंफ में औषधीय गुण भी होते हैं। बार-बार खांसी आने पर सौंफ तथा मिश्री का चूर्ण मुख में रखने से खांसी में लाभ होता है। इसका अर्क बच्चों के पाचन विकार एवं अन्य रोग के उपचारों में किया जाता है।

भारत के राजस्थान, आंध्र प्रदेश, पंजाब, उत्तर प्रदेश, गुजरात, मध्य प्रदेश, कर्नाटक और हरियाणा प्रमुख सौंफ उत्पादक राज्य हैं।

### जलवायु एवं भूमि

सौंफ की अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए सामान्य किस्म की ठंडी जलवायु सर्वोत्तम होती है अंकुरण के लिये 20–29°C, फसल वृद्धि एवं विकास के लिए 15–25°C उपयुक्त होता है, सौंफ की सफल खेती के लिए जनवरी से मार्च तक का मौसम शुष्क और ठंडा होना चाहिए। इसकी अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए दोमट या काली बलुई मिट्टी, जिसमें जीवांश की भरपूर मात्रा एवं उचित जल निकास, पीएच मान 6.5–7.5 सर्वोत्तम मानी जाती है।

### खेत की तैयारी

सौंफ की खेती के लिए खेत की तैयारी करते समय पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से तथा बाद में 3 से 4 जुताई देशी हल या कल्टीवेटर से कर के खेत को समतल बनाकर पाटा लगाते हुए एक सा बना ले। खेती की आखिरी के जुताई समय 15–20 टन सड़ी हुई गोबर या कम्पोस्ट खाद मिला देनी चाहिए और पाटा लगा देना चाहिए जिससे की खाद मिट्टी में अच्छी तरह मिल जाए।

### बुवाई का समय

सौंफ की खेती खरीफ एवं रबी दोनों ही मौसम में की जा सकती है। लेकिन रबी का मौसम सौंफ की खेती करने से अधिक उत्पादन प्राप्त होता है। खरीफ में इसकी बुवाई जुलाई माह में तथा रबी के सीजन में इसकी बुवाई अक्टूबर के आखिरी सप्ताह से लेकर नवंबर के प्रथम सप्ताह तक की जा सकती है।

### बुवाई की विधि

सौंफ के बीजों की बुवाई लाइनों में करना चाहिए। इसके दो तरीके से बुवाई की जाती है। पहली छिटककर तथा दूसरी लाइनों में

रोपाई करके की जाती है। लाइनों में रोपाई करने के तरीके में लाइन से लाइन की दूरी 60 सेंटीमीटर तथा पौधे से पौधे की दूरी 45 सेंटीमीटर रखनी चाहिए। इसमें इस बात ध्यान का ध्यान देना चाहिए कि जब इसकी पौध विधि से रोपाई की जाती है तो 7 से 8 सप्ताह पहले नर्सरी डालकर पौध तैयार कर लेनी चाहिए। 30 से 45 दिनों के पौध रोपाई के लिए उपयुक्त पाई गई है।

### बीज दर

सौंफ बीजों को सीधा बुवाई या पौधा रोपाई करके की जाती है। सीधी बुवाई के लिए एक हेक्टेयर में 10 से 12 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है। जब कि पौध लगाकर 100 वर्ग मीटर प्रति हेक्टेयर क्षेत्रफल के लिए नर्सरी में 3 से 4 किलोग्राम बीज का प्रयोग करते हैं।

### बीज उपचार

बीज बुवाई पहले फफूंद नाशक दवा (कार्बेन्डाजिम अथवा हेक्सकोनाजोल से /2 ग्राम से 2.5 ग्राम प्रति किलो बीज) से उपचारित करें (लगभग 8 घंटे)। इसके अलावा सौंफ के बीज को ट्राईकोडरमा (जैविक फफूंद नाशक 8 से 10 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज) से भी उपचारित करके बुवाई करना चाहिए।

### खाद एवं उर्वरक की मात्रा

सौंफ की फसल के लिए खाद प्रबंधन में नत्रजन-80 किग्रा. फॉस्फोरस-60 किग्रा. एवं पोटाश-40 किग्रा. की आवश्यकता होती है। अंतिम जुताई के समय सड़ी हुई गोबर या कम्पोस्ट खाद की पूरी मात्रा, नत्रजन की 1/3 मात्रा तथा फॉस्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा खेत में मिला देनी चाहिए। शेष नत्रजन की मात्रा बुवाई के 60 व 90 दिनों बाद खड़ी फसल में टॉपड्रेसिंग के माध्यम से देते हैं।

### सिंचाई

सौंफ की फसल की सिंचाई के लिए टपकाव बिधि का प्रयोग सर्वोत्तम मानी जाती है इस पद्धति से पानी कम लगता है। इस विधि से सिंचाई करने पर आवश्यक मात्रा में पानी पौधों की जड़ों तक पहुंच जाता है। इसकी पहली सिंचाई पौध रोपाई के बाद हल्की सिंचाई करनी चाहिए। इसके बाद आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहना चाहिए। इसके अलावा बीज बनते तथा पकते समय सिंचाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

### निराई-गुडाई

इसकी निराई गुडाई का कार्य पहली सिंचाई के बाद शुरू कर देना चाहिए तथा 45 से 50 दिन बाद निराई-गुडाई करते रहना चाहिए, क्योंकि फसल बड़ी होने पर निराई-गुडाई करते समय पौधे टूटने का डर बना रहता है।

## सौंफ की उन्नत किस्में

**गुजरात सौंफ 1** : यह किस्म शुष्क परिस्थिति के लिए उपयुक्त है। यह किस्म किस्म 200 से 230 दिन में तैयार हो जाती है। इसकी 16.95 कुंतल प्रति हैक्टेयर तक उपज प्राप्त की जा सकती है। इसमें वाष्पशील तेल की मात्रा 1.60 प्रतिशत होती है।

**गुजरात सौंफ-2** : यह किस्म सिंचित तथा असिंचित दोनों परिस्थितियों के लिए उपयुक्त है। इसकी औसत उपज 19.4 किंवटल प्रति हैक्टर हैं। इसमें वाष्पशील तेल की मात्रा 2.4 प्रतिशत होती हैं।

**गुजरात सौंफ 11** : यह किस्म सिंचित खेती के लिए उपयुक्त है। इसमें वाष्पशील तेल की मात्रा 1.8 प्रतिशत है। इसकी औसत पैदावार 24.8 कुंतलप्रति हैक्टेयर तक प्राप्त की जा सकती है।

**आर एफ 125** : यह जल्दी पकने वाली किस्म है। इसकी उपज क्षमता 17.30 कुंतल प्रति हैक्टेयर तक होती है।

**आर एफ 105** : यह किस्म 150 से 160 दिन में पक कर तैयार हो जाती है। इस किस्म की औसत उपज क्षमता 15.50 कुंतल प्रति हैक्टेयर है।

**आर एफ 143** : सौंफ की यह किस्म 140 से 150 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसकी औसत उपज 18 कुंतलप्रति हैक्टेयर है। इसमें वाष्पशील तेल अधिक (1.87 प्रतिशत) होता है।

## प्रमुख रोग एवं प्रबन्धन

**आल्टरनरिया झुलसा रोग** इस रोग का आक्रमण मुख्यतया पुष्पक्रमों पर होता है। प्रारम्भिक अवस्था में इसका प्रभाव पुष्प कलिकाओं पर पड़ता है जो पीली और भूरी होकर सूख जाती है, जल्दी ही बीमारी फैलकर पूरे पुष्पक्रमों को उसके वृंत तक को सुखा देती है। जिससे उपज को भारी हानि पहुंचती है।

**रोकथाम** इस रोग से बचाव के लिए मैकोजेव 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव 10 से 15 दिन के अंतर पर दो बार करना चाहिए।

**छाछया रोग (चूर्णी फफूंद)** पत्तियों एवं पौधों के अन्य भागों पर सफेद चूर्ण की परत दिखाई देती है। बचाव हेतु डीनोकैप 1.0 ग्राम या सल्फेक्स 2.0 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से मिलाकर छिड़काव करें अथवा सल्फर पाउडर 20-25 किग्रा. प्रति हेक्टेयर का खड़ी फसल पर भुरकाव करें।

**रामूलेरिया झुलसा** यह रोग बुवाई के 60 से 80 दिन बाद नीचे की पत्तियों पर धब्बों के रूप में उभरती है यह धब्बे धीरे-धीरे विकसित होकर बड़े हो जाते हैं तथा पौधों का उच्चत विकास नहीं हो पाता है।

**रोकथाम** इस रोग की रोकथाम के लिए, लहसुन के अर्क (0.5 प्रतिशत) का पत्तों पर छिड़काव बहुत प्रभावी पाया गया है इस तकनीक के कारण सौफ में रामुलारिया ब्लाइट रोग पर नियंत्रण 54 प्रतिशत तक कम पाया गया। इसके अतिरिक्त फूंदीनाशी जैसे ब्लाइटोक्स, फाइटोलान या ब्ल्यू कॉपर के 0.2से 0.3 प्रतिशत घोल का छिड़काव से उपचार कर सकते हैं।

**प्रमुख कीट एवं प्रबधन** माहू या चौपा का आक्रमण फसल पर फूल आना शुरू होने के बाद होता है।

**रोकथाम** इस कीट की रोकथाम के लिए इमिडाक्लोप्रिड 0.5 मिली प्रति लीटर पानी प्रति हेक्टेयर में घोलकर 10 से 15 दिन के अंतर पर दो बार छिड़काव करना चाहिए।

**फसल की कटाई** सौफ के अम्बेल जब पूरी तरह विकसित होकर और बीज पूरी तरह जब पककर सूख जाय तभी गुच्छों की कटाई करनी चाहिए। कटाई के बाद एक-दो दिन धूप में सुखा देना चाहिए तथा हरा रंग रखने के लिए 8 से 10 दिन छाया में सुखाना चाहिए जिससे इसमें अनावश्यक नमी जमा न हो। हरी सौफ प्राप्त करने हेतु फसल में जब अम्बेल के फूल आने के 30 से 40 दिन में गुच्छों की कटाई करनी चाहिए। कटाई के बाद गुच्छों को छाया में ही अच्छी तरह सुखा लेना चाहिए।

**सौफ की उपज** उन्नत कृषि तकनीकी को अपनाकर की गयी सौफ की खेती से लगभग 15 से 19 कुंतल प्रति हेक्टेयर तक पूर्ण विकशीत हरे दाने व 5 से 7.5 कुंतल प्रति हेक्टेयर तक बारीक किस्म वाली सौफ की उपज प्राप्त की जा सकती है।

### प्रसंस्करण

सौफ की प्रसंस्करण विधि पूरी तरह से मशीनीकृत होनी चाहिए। इसके प्रसंस्करण के प्रत्येक चरण के माध्यम से सामग्री की महत्वपूर्ण गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए देखभाल की जानी चाहिए। प्रसंस्करण विधि का चयन इस तरह से किया जाना चाहिए कि यह एडिटिक्स और प्रोसेसिंग की संख्या और मात्रा को सीमित कर दे। आवश्यक तेल प्राप्त करने के लिए परिपक्व सूखे बीजों को आसुत किया जाता है। आवश्यक तेल के निष्कर्षण के लिए आमतौर पर हाइड्रो या भाप आसवन विधि का उपयोग किया जाता है। सूखे बीजों से औसतन 0.7-2.0 प्रतिशतवाष्पशील तेल निकलता है। सौफ से तैयार ओलियोरेसिन की अंतरराष्ट्रीय बाजार में अच्छी मांग है। वाष्पशील तेल या ओलियोरेसिन को अच्छी तरह से सीलबंद बोतलों या एल्यूमीनियम कंटेनर में रखा जाना चाहिए।

### पैकेजिंग और भंडारण

अच्छी तरह से साफ किए गए सौफ के बीजों को प्रारंभिक नमी

स्तर 7-8 प्रतिशत और संतुलन सापेक्ष आर्द्रता 40 प्रतिशत के भीतर संग्रहित किया जाता है। सौंफ के बीजों को अच्छी तरह से पैक करके अगले सीजन की फसल की मार्केटिंग या बुवाई तक सामान्य परिस्थितियों में हवादार सूखी और ठंडी जगह पर संग्रहित किया जाता है। अच्छी कीमत और आसान विपणन प्राप्त करने के लिए उत्पाद को विभिन्न ग्रेडों में वर्गीकृत किया जाना चाहिए और ठीक से संग्रहीत किया जाना चाहिए। बीजों को पॉलीथिन फिल्म से ढके बोरियों में रखा जाता है। उत्पाद को पॉलीथिन बैग, कांच के कंटेनर, वैक्यूम पैकेजिंग में भी पैक किया जा सकता है।

अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना, कुमारगंज, अयोध्या द्वारा सौंफ की विकसित प्रजाति।



नरेन्द्र सौंफ-1 : अनुमोदित वर्ष-2014, परिपक्वता 150-155 दिन, उपज-15-19 कुन्तल प्रति हेक्टेयर

### अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

#### संरक्षक

डॉ. बिजेन्द्र सिंह, कुलपति, आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज अयोध्या (उ.प्र.) भारत

#### सह-संरक्षक

डॉ. संजय पाठक, अधिष्ठाता, उद्यान एवं वानिकी महाविद्यालय  
डॉ. ए. के. गंगवार, निदेशक शोध

#### संपादक मंडल

डॉ. प्रदीप कुमार, प्राध्यापक पादप रोग विज्ञान एवं मुख्य अन्वेषक  
अखिल भारतीय मसाला अनुसंधान परियोजना  
डॉ. आशीष कुमार सिंह, सहायक प्राध्यापक, सब्जी विज्ञान  
श्री आर. के. गुप्ता, तकनीकी सहायक (अ.भा.म.अ.प.)

मोबाईल : 7607617430, 9415577639, 9451778519

#### प्रकाशित

अखिल भारतीय समन्वित मसाला अनुसंधान परियोजना, अनुसूचित जाति उपयोजना (SCSP) अन्तर्गत, वर्ष-2025